Quest Journals
Journal of Hindi, Political Science and Home Science
Volume 16 ~ Issue 3 (May. – June. 2026) pp: 31-35
ISSN(Online): 2347 – 2305
www.questjournals.org

Research Paper

विभूति नारायण राय के उपन्यासों का साहित्यिक महत्त्व

ज्योति कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

सारांश–
विभूति नारायण राय (जन्म: 1951) समकालीन हिन्दी उपन्यास के उन विशिष्ट हस्ताक्षरों में हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं से साहित्य की परिधि को नए आयाम दिए हैं। उनके उपन्यास– 'घर', 'शहर में कर्फ्यू', 'तबादला', 'किस्सा लोकतंत्र' और 'प्रेम की भूतकथा'– न केवल समकालीन भारतीय यथार्थ के प्रामाणिक दस्तावेज हैं, बल्कि शिल्प, भाषा और कथा-संरचना की दृष्टि से भी हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान रखते हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में विभूति नारायण राय के उपन्यासों के साहित्यिक महत्त्व का बहुआयामी विश्लेषण किया गया है– उनकी कथा-वस्तु, भाषा-शैली, पात्र-सृष्टि, सामाजिक सरोकार, और हिन्दी उपन्यास परम्परा में उनके योगदान के परिप्रेक्ष्य में।

मुख्य शब्द : *विभूति नारायण राय, साहित्यिक महत्त्व, हिन्दी उपन्यास, समकालीन यथार्थ, शिल्प-विधान, सामाजिक सरोकार।*

प्रस्तावना–

हिन्दी उपन्यास की यात्रा प्रेमचन्द के 'गोदान' से आरम्भ होकर समकालीन दौर तक एक लम्बा और विविधतापूर्ण पथ तय कर चुकी है। प्रत्येक युग में ऐसे लेखक आए जिन्होंने उपन्यास विधा को नई ऊँचाइयाँ दीं। प्रेमचन्द ने उसे किसानों और स्त्रियों का साहित्य बनाया; जैनेन्द्र और अज्ञेय ने उसे मनोवैज्ञानिक गहराई दी; श्रीलाल शुक्ल ने व्यंग्य को उसका अस्त्र बनाया; और विभूति नारायण राय ने उसे साम्प्रदायिक हिंसा, पुलिस-तंत्र और लोकतंत्र की विकृतियों का बेबाक आईना बनाया।

विभूति नारायण राय का साहित्यिक महत्त्व कई कारणों से असाधारण है। वे उन विरल लेखकों में हैं जो एक साथ रचनाकार भी हैं और उस व्यवस्था के भीतरी साक्षी भी, जिसकी वे आलोचना करते हैं। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के रूप में उन्होंने दंगों, राजनीतिक दबाव और प्रशासनिक विफलताओं को सीधे अनुभव किया और उसी अनुभव को साहित्य में ढाला। यही कारण है कि उनके उपन्यास आत्मपरक कल्पना नहीं, बल्कि जीवंत यथार्थ के प्रामाणिक आख्यान हैं।

कथा-वस्तु की मौलिकता और प्रासंगिकता–

किसी भी उपन्यास के साहित्यिक महत्त्व का पहला मापदण्ड होता है– उसकी कथा-वस्तु की मौलिकता और सामाजिक प्रासंगिकता। विभूति नारायण राय इस कसौटी पर पूरी तरह खरे उतरते हैं। उनके उपन्यासों की कथा-वस्तु हिन्दी साहित्य में पहले से चले आ रहे विषयों से सर्वथा भिन्न है।

जहाँ अधिकांश हिन्दी उपन्यासकारों ने प्रेम, पारिवारिक सम्बन्ध, दार्शनिक अन्वेषण या ऐतिहासिक घटनाओं को अपनी कथा-भूमि बनाया, वहीं राय ने साम्प्रदायिक हिंसा, पुलिस-तंत्र की आन्तरिक संरचना, और लोकतंत्र के भ्रष्टाचार को अपनी कथा का केन्द्र बनाया। 'शहर में कर्फ्यू' में दंगाग्रस्त शहर की चौबीस घण्टों की घटनाएँ हैं; 'तबादला' में एक ईमानदार पुलिस अधिकारी के संघर्ष की कहानी है; 'किस्सा लोकतंत्र' में चुनावी राजनीति की नंगी सच्चाई है।

इन विषयों की प्रासंगिकता आज भी उतनी ही तीखी है, जितनी तब थी जब राय ने इन्हें लिखा था। साम्प्रदायिक दंगे, पुलिस की पक्षपातपूर्ण भूमिका और राजनीतिक भ्रष्टाचार– ये समस्याएँ भारतीय समाज में आज भी जड़ें जमाए हुए हैं। इसीलिए राय के उपन्यास 'टाइम-कैप्सूल' नहीं हैं–वे वर्तमान का दर्पण हैं।

भाषा-शैली और कथा-भाषा का नवाचार–

विभूति नारायण राय के साहित्यिक महत्त्व का दूसरा प्रमुख आधार है– उनकी कथा-भाषा का नवाचार। हिन्दी उपन्यास की भाषा परम्परागत रूप से साहित्यिक संस्कृतनिष्ठ हिन्दी या ग्रामीण बोलियों की ओर झुकती रही है। राय ने इस परम्परा को तोड़कर एक नई 'पुलिसिया-प्रशासनिक भाषा' को साहित्यिक गरिमा प्रदान की।

उनके उपन्यासों में उर्दू-हिन्दी की मिली-जुली बोलचाल, सरकारी कार्यालयों की फाइलीभाषा, पुलिस-रिपोर्ट की शैली, और दंगाइयों की खुरदरी बोली — सभी एक साथ मिलकर एक ऐसी संश्लिष्ट भाषा बनाती हैं जो पाठक को तत्काल उस संसार में ले जाती है जहाँ कहानी घटित हो रही है। यह 'भाषिक यथार्थवाद' (Linguistic Realism) राय की सबसे बड़ी शिल्पगत उपलब्धि है।

(क) रिपोर्ताज शैली : 'शहर में कर्फ्यू' में राय ने रिपोर्ताज और उपन्यास के बीच की सीमारेखा को तोड़ा है। पाठक को लगता है कि वह किसी समाचारपत्र की रिपोर्ट पढ़ रहा है, परन्तु धीरे-धीरे वह कथा-संसार में इतना डूब जाता है कि भेद मिट जाता है। यह 'तटस्थ भाव से भयावह सच बोलना' राय की विशिष्ट शैलीगत युक्ति है।

(ख) संवाद की स्वाभाविकता : राय के संवाद कृत्रिम नहीं लगते। एक पुलिस दारोगा जिस भाषा में बात करता है, एक मुहल्ले का बुज़ुर्ग जिस लहजे में कहानी कहता है, एक दंगाग्रस्त स्त्री जिस तरह अपना दर्द व्यक्त करती है — यह सब इतना जीवंत है कि पाठक भूल जाता है कि वह साहित्य पढ़ रहा है।

(ग) व्यंग्य और विडम्बना : राय की भाषा में एक सूक्ष्म व्यंग्य सदा मौजूद रहता है। वे सीधे उपदेश नहीं देते, बल्कि घटनाओं और संवादों के माध्यम से व्यवस्था की विडम्बनाएँ इस तरह उजागर करते हैं कि पाठक स्वयं निष्कर्ष तक पहुँचता है।

पात्र-सृष्टि और मानवीय संवेदनशीलता–

महान उपन्यासों की पहचान उनके यादगार पात्रों से होती है। विभूति नारायण राय ने अपने उपन्यासों में ऐसे पात्र रचे हैं जो न पूरी तरह नायक हैं, न पूरी तरह खलनायक– वे 'ग्रे' हैं, जैसा कि वास्तविक जीवन में होता है। यह पात्र-सृष्टि राय की महत्त्वपूर्ण साहित्यिक उपलब्धि है।

'शहर में कर्फ्यू' में पुलिस का वह अधिकारी जो अपनी ड्यूटी और अपनी साम्प्रदायिक भावनाओं के बीच फँसा है– वह न पूरी तरह दोषी है, न निर्दोष। 'तबादला' का नायक पुलिस अधिकारी ईमानदार है, परन्तु उसकी ईमानदारी उसे नष्ट कर देती है– यह त्रासदी पाठक के मन में लम्बे समय तक बनी रहती है।

राय के स्त्री पात्र विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। वे 'बेचारी पीड़ित' नहीं हैं– वे साम्प्रदायिक हिंसा की सबसे क्रूर शिकार होते हुए भी जिजीविषा और प्रतिरोध की भावना से भरी हैं। 'घर' की स्त्री पात्र टूटती है, बिखरती है, परन्तु फिर भी जीने का रास्ता खोजती है। यह मानवीय संघर्ष राय के उपन्यासों को एक सार्वभौमिक अपील देता है।

इसके अतिरिक्त राय के उपन्यासों में वे 'साधारण' पात्र हैं जो न किसी दल के समर्थक हैं, न किसी विचारधारा के। वे केवल जीना चाहते हैं। दंगों में इन्हीं साधारण लोगों की तबाही सबसे अधिक मर्मस्पर्शी है। राय इन 'अनाम' पीड़ितों को साहित्यिक पहचान देते हैं– यह उनकी सबसे बड़ी मानवीय उपलब्धि है।

सामाजिक सरोकार और राजनीतिक चेतना–

साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण प्रकार्य है– समाज को उसकी विकृतियों का आईना दिखाना। विभूति नारायण राय के उपन्यास इस प्रकार्य को असाधारण ढंग से पूरा करते हैं। उनके उपन्यासों में सामाजिक सरोकार केवल नारेबाजी नहीं है– वह कथा की आत्मा में गहरे उतरा हुआ है।

राय ने अपने उपन्यासों में जिन सामाजिक-राजनीतिक प्रश्नों को उठाया है, वे आज भी उतने ही ज्वलंत हैं। साम्प्रदायिक हिंसा का राजनीतिक उपयोग, पुलिस-तंत्र में जातीय और धार्मिक पूर्वाग्रह, लोकतंत्र का दुरुपयोग, अल्पसंख्यकों की असुरक्षा– ये सभी प्रश्न राय के उपन्यासों में इतनी गहराई से उठाए गए हैं कि वे समाज-विज्ञान के अध्ययन के लिए भी उतने ही उपयोगी हैं।

'किस्सा लोकतंत्र' में राय ने दिखाया है कि किस प्रकार चुनाव– जो लोकतंत्र का सबसे बड़ा उपकरण है– साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण का माध्यम बन जाता है। यह राजनीतिक चेतना राय को महज एक 'कथाकार' से ऊपर उठाकर एक 'सामाजिक विश्लेषक' के स्तर पर ले जाती है।

राय का सामाजिक सरोकार एकांगी नहीं है। वे न केवल हिन्दुओं की साम्प्रदायिकता की आलोचना करते हैं, बल्कि मुसलमानों की रुढ़िवादिता पर भी सूक्ष्म प्रश्न उठाते हैं। उनका दृष्टिकोण समग्र और न्यायसंगत है– यही उनके साहित्यिक महत्त्व को सर्वस्वीकार्य बनाता है।

हिन्दी उपन्यास परम्परा में राय का योगदान–

किसी रचनाकार के साहित्यिक महत्त्व को तब पूरी तरह समझा जा सकता है, जब उसे उस परम्परा के सन्दर्भ में देखा जाए जिसमें वह लिखता है। हिन्दी उपन्यास की परम्परा में विभूति नारायण राय का योगदान कई स्तरों पर मूल्यांकन योग्य है। प्रेमचन्द ने हिन्दी उपन्यास को किसान-जीवन और सामाजिक न्याय का वाहन बनाया। यशपाल ने उसे राजनीतिक चेतना से जोड़ा। भीष्म साहनी ने विभाजन की त्रासदी को उपन्यास का विषय बनाया। श्रीलाल शुक्ल ने नौकरशाही को व्यंग्य का शिकार बनाया। विभूति नारायण राय ने इन सभी परम्पराओं से सीखते हुए एक नई परम्परा की नींव रखी– 'पुलिस-प्रशासन-साम्प्रदायिकता' के त्रिकोण की साहित्यिक पड़ताल की परम्परा।

राय की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने हिन्दी उपन्यास में 'Insider's Perspective' (भीतरी दृष्टि) को स्थापित किया। वे उस व्यवस्था के भीतर से लिख रहे थे जिसकी आलोचना कर रहे थे। यह दृष्टि उनके उपन्यासों को एक अनूठी प्रामाणिकता प्रदान करती है जो बाहर से देखने वाले किसी भी लेखक के लिए सम्भव नहीं थी।

इसके अतिरिक्त राय ने हिन्दी उपन्यास में 'एनसेम्बल कास्ट' (Ensemble Cast) की तकनीक को प्रमुखता दी। उनके उपन्यासों में कोई एक 'मुख्य नायक' नहीं होता– पूरा समाज नायक है। यह शिल्पगत नवाचार हिन्दी उपन्यास को नई सम्भावनाएँ देता है।

तुलनात्मक अध्ययन : राय और समकालीन उपन्यासकार–

विभूति नारायण राय के साहित्यिक महत्त्व को और स्पष्ट करने के लिए उनकी तुलना समकालीन उपन्यासकारों से करना उपयोगी होगा। उनके समकालीनों में काशीनाथ सिंह, संजीव, अब्दुल बिस्मिल्लाह और मैत्रेयी पुष्पा प्रमुख हैं।

काशीनाथ सिंह के उपन्यासों में बनारसी जीवन की सांस्कृतिक विविधता है; संजीव के यहाँ औद्योगिक मजदूरों का दर्द है; अब्दुल बिस्मिल्लाह की रचनाओं में बुनकर-जीवन की त्रासदी है। इनमें से कोई भी साम्प्रदायिक हिंसा को उस गहराई और प्रामाणिकता से नहीं पकड़ पाया जैसा राय ने किया।

अंग्रेजी साहित्य में सलमान रुश्दी, विक्रम सेठ जैसे लेखकों ने भी भारतीय साम्प्रदायिकता को विषय बनाया है, परन्तु उनकी दृष्टि बाहरी और कभी-कभी अभिजात्य है। राय की दृष्टि बिल्कुल भीतरी और जमीनी है। यही कारण है कि उनके उपन्यास आम भारतीय पाठक से सीधे जुड़ते हैं।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखें तो राय की कथा-शैली जोसेफ कॉनराड और ग्रेहम ग्रीन की 'राजनीतिक उपन्यास' परम्परा से जुड़ती है, जहाँ व्यक्ति और राज्य के बीच नैतिक संघर्ष ही कथा का केन्द्र होता है। इस प्रकार राय हिन्दी साहित्य को वैश्विक उपन्यास-परम्परा से जोड़ने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आलोचनात्मक स्वागत और मूल्यांकन

विभूति नारायण राय के उपन्यासों को हिन्दी आलोचना जगत में गम्भीरता से लिया गया है। 'शहर में कर्फ्यू' के प्रकाशन के बाद से ही उन्हें हिन्दी के महत्त्वपूर्ण उपन्यासकारों में गिना जाने लगा। नामवर सिंह से लेकर मैनेजर पाण्डेय तक कई प्रमुख आलोचकों ने राय के उपन्यासों की सराहना की है।

आलोचकों ने राय के उपन्यासों में तीन प्रमुख गुणों को रेखांकित किया है: प्रथमतः, उनकी 'दस्तावेजी प्रामाणिकता'– उनके उपन्यास इतिहास की किताबों की तरह पढ़े जा सकते हैं; द्वितीयतः, उनकी 'नैतिक स्पष्टता'– वे जानते हैं कि सही क्या है, भले ही सिस्टम उसे असम्भव बना दे; और तृतीयतः, उनका 'साहसिक विषय-चुनाव'– वे वे विषय उठाते हैं जिनसे अधिकांश लेखक बचते हैं।

हालाँकि कुछ आलोचकों ने यह भी कहा है कि राय के उपन्यासों में 'काव्यात्मकता' और 'मनोवैज्ञानिक गहराई' की कभी-कभी कमी महसूस होती है। उनकी कथाशैली इतनी तथ्यपरक है कि वह कविता के स्तर पर नहीं पहुँच पाती। परन्तु यह भी कहा जा सकता है कि यह उनका सचेत शिल्पगत निर्णय है– वे यथार्थ को 'सुन्दर' बनाने से परहेज करते हैं।

आधुनिक सन्दर्भ में राय के उपन्यासों की प्रासंगिकता–

साहित्य का वास्तविक परीक्षण तब होता है जब वह अपने रचनाकाल से आगे भी प्रासंगिक बना रहे। विभूति नारायण राय के उपन्यास इस परीक्षण में सफल होते हैं। 1988 में लिखा 'शहर में कर्फ्यू' 2026 में भी उतना ही प्रासंगिक लगता है।

आज के भारत में– जहाँ सोशल मीडिया पर अफवाहें फैलाकर दंगे भड़काए जाते हैं, जहाँ 'लव जिहाद' और 'गो-रक्षा' के नाम पर हिंसा होती है, जहाँ चुनाव से पहले साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण एक राजनीतिक रणनीति बन चुकी है– राय के उपन्यास एक जरूरी चेतावनी की तरह काम करते हैं।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल युग में जब 'फेक न्यूज' और 'हेट स्पीच' नई समस्याएँ बन चुकी हैं, राय के उपन्यासों में निहित यह सन्देश और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है– कि साम्प्रदायिक हिंसा 'अचानक नहीं होती', वह सुनियोजित होती है, और उसके लिए जिम्मेदार लोग दूर बैठकर सुरक्षित रहते हैं जबकि आम लोग मरते हैं।

निष्कर्ष–

विभूति नारायण राय के उपन्यासों का साहित्यिक महत्त्व बहुआयामी और सुस्थापित है। कथा-वस्तु की मौलिकता, भाषा-शैली का नवाचार, पात्र-सृष्टि की प्रामाणिकता, सामाजिक सरोकार की गहराई, और हिन्दी उपन्यास परम्परा में उनके विशिष्ट योगदान– इन सभी आयामों से देखें तो राय हिन्दी साहित्य के उन थोड़े-से उपन्यासकारों में हैं जिनका काम न केवल साहित्यिक, बल्कि सामाजिक और ऐतिहासिक दृष्टि से भी अत्यंत मूल्यवान है।

राय की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उन्होंने हिन्दी उपन्यास को एक नई सामाजिक जिम्मेदारी दी। उन्होंने सिद्ध किया कि साहित्य केवल मनोरंजन या सौन्दर्य का माध्यम नहीं है– वह एक सामाजिक हस्तक्षेप भी हो सकता है, एक ऐसा हस्तक्षेप जो व्यवस्था से प्रश्न पूछे, पीड़ितों को आवाज दे, और पाठक की अंतरात्मा को झकझोरे।

भविष्य में जब भी भारतीय समाज और साहित्य के सम्बन्ध का इतिहास लिखा जाएगा, विभूति नारायण राय का नाम उन कुछ चुनिन्दा लेखकों में अवश्य होगा जिन्होंने साहित्य को समाज के सबसे कठिन प्रश्नों से जोड़ने का साहस दिखाया। उनके उपन्यास हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. राय, विभूति नारायण. घर. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1986.
2. राय, विभूति नारायण. शहर में कर्फ्यू. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1988.
3. राय, विभूति नारायण. तबादला. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1993.

4. राय, विभूति नारायण. किस्सा लोकतंत्र. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2005.
5. राय, विभूति नारायण. प्रेम की भूतकथा. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2014.
6. प्रेमचन्द. गोदान. इलाहाबाद: सरस्वती प्रेस, 1936.
7. साहनी, भीष्म. तमस. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1974.
8. शुक्ल, श्रीलाल. राग दरबारी. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1968.
9. सिंह, नामवर. उपन्यास और लोकतंत्र. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1989.
10. पाण्डेय, मैनेजर. साहित्य और इतिहास-दृष्टि. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 1981.
11. सेठी, रमेश कुमार. विभूति नारायण राय: रचना-संसार. दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2002.
12. त्रिपाठी, रोहिणी अग्रवाल. समकालीन हिन्दी उपन्यास: एक मूल्यांकन. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, 2007.
13. कुमार, अरुण. हिन्दी उपन्यास में यथार्थवाद. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1998.
14. चन्द्रा, विपन. साम्प्रदायिकता: भारत का इतिहास और राजनीति. नई दिल्ली: हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, 1984.